दसवां संस्करण

पत्रिका

उन्नति

लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा

वर्ष - 2022

भारतीय लेखापरीक्षा और लेखाविभाग

महानिदेशक लेखापरीक्षा का कार्यालय

दक्षिण पश्चिम रेलवे, हब्बल्ली कर्नाटक- 580023

दूधसागर झरना, ब्रेगांजा घाट, गोवा

"उन्नति"

(दसवां अंक) वर्ष-2022

महानिदेशक लेखापरीक्षा का कार्यालय

दक्षिण पश्चिम रेलवे हुब्बल्ली

संरक्षक : श्री र. नरेश, महानिदेशक लेखापरीक्षा

उप संरक्षक : श्री एम. दिनेश नाईका, निदेशक लेखापरीक्षा

वरिष्ठ संपादक : श्री डी. एम. महांतेश, व. लेखापरीक्षा अधिकारी

श्री एस. श्रीकांत, व. लेखापरीक्षा अधिकारी

सह संपादन एवं छायाचित्र : श्री सीयाराम मीना, वरिष्ठ लेखापरीक्षक

तकनीकी सहयोग : श्री अभिषेक आनंद, आं. प्र. प्र.

शुभकामना संदेश

वर्ष 2022 में 'उन्नति' पत्रिका का दसवां अंक प्रकाशित करने में मुझे अत्यंत हर्ष की अनुभूति हो रही है। कार्यालय ने राजभाषा विभाग द्वारा निर्धारित सभी लक्ष्यों को सुचारु रुप से प्राप्त करने का प्रयास किया गया है। **कार्यालय के** अधिकारियों एवं कर्मचारियों ने हिन्दी कार्यान्वयन को भी महत्व दिया है और अपने लेखों को प्रस्तुत किया है। आशा है कि इस पत्रिका के विमोचन से समस्त अधिकारी एवं कर्मचारी प्रेरित होंगे और 'उन्नति' पत्रिका के उज्ज्वल भविष्य का मार्ग प्रशस्त होगा।

(र. नरेश)
महानिदेशक लेखापरीक्षा

निदेशक लेखापरीक्षा की कलम से.....

'उन्नति' पत्रिका का विमोचन हिन्दी भाषा को राष्ट्रव्यापी बनाने की ओर एक सराहनीय कदम है। हिन्दी भाषा एक ऐसा माध्यम है, जो पूरे देश को एक कड़ी में पिरो सकती है। हमारे कार्यालय के हर एक कर्मचारी एवं अधिकारी, जिन्होंने अपनी मेहनत और लगन से इस पत्रिका को सफल बनाने में अपना योगदान दिया है, उन सबको मैं बधाई देता हूँ। क्योंकि यह पत्रिका एक सामूहिक प्रयास का ही परिणाम है।

मैं ऐसी आशा करता हूँ, कि हर वर्ष की भांति इस वर्ष भी 'उन्नति' पत्रिका का दस वां संस्करण सफल हो।

(एम. दिनेश नाईका)

निदेशक लेखापरीक्षा

संपादकीय ...

यह हमारे लिए बहुत ही हर्ष का विषय है कि हमारे कार्यालय की हिन्दी पत्रिका 'उन्नति' का दसवाँ संस्करण प्रकाशित हो रहा है। इससे हमारे कार्यालय के अधिकारियों एवं कर्मचारियों को अपने लेखों द्वारा अपने विचारों को व्यक्त करने का मौका मिलता है। इस पत्रिका को सफल बनाने में हमारे अधिकारियों एवं कर्मचारियों की अहम भूमिका रही है। अतः उन सबको मैं बहुत बधाई देता हूँ और 'उन्नति' पत्रिका के दस वें संस्करण की सफलता की कामना करता हूँ।

(डी. एम. महांतेश)

वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी/राजभाषा

<u>नोट</u> - पत्रिका में प्रकाशित रचनाओं में व्यक्त विचार संबन्धित लेखकों के हैं। संपादक मण्डल एवं कार्यालय का उनसे सहमत होना आवश्यक नहीं है। प्रकाशित रचनाओं के संबंध में किसी भी विवाद का उत्तरदायित्व भी रचनाकारों का ही होगा।

अनुक्रमणिका

क्र.सं.	शीर्षक	रचनाकार	पृष्ठ
1	सार्थक पहल	दसारी कृष्ण मूर्ति	8
2	खुशी का राज	महांतेस हुग्गी	9
3	सुविचार	विनोद कुमार मीणा	10
4	परमात्मा और किसान	रागिनी सिंह	11
5	सत्रह ऊँट	राजेश कुमार	12
6	भाग्य	शैलेंद्र प्रजापति	13
7	हुब्बल्ली एक परिचय	राकेश कुमार	14
8	सफलता का रास्ता	विपिन कुमार	15
9	कायरता - एक अनोखी कहानी	उदय कुमार बी. मनकट्टी	16
10	सच्ची मित्रता	पीयूष पपनेजा	17
11	आत्मसंयम	र. बद्रीनाथ	18
12	प्लास्टिक प्रदूषण	अभिषेक आनंद	18
13	मुश्किलों का हल	सीयाराम मीणा	20
14	सफलता का रहस्य	शुभम गौर	22
15	एकाग्रता	टी. वेंकट रथनैय्या	23

हिन्दी पखवाड़ा उद्घाटन समारोह -2022

हिन्दी पखवाड़ा उद्घाटन समारोह -2022

1. <u>सार्थक पहल</u>

सब जानते हैं कि हम जैसा बोते हैं, वैसा ही काटते हैं। आज हर इंसान सुख की खोज में खड़ा है। ऐसे लोगों को संबोधित करते हुए एक विद्वान ने ठीक ही कहा है, 'मैं भी कहता हूँ कि जीवन सचमुच अंधकारमय है, यदि आकांक्षा न हो, सारी आकांक्षाए अंधी हैं, । यदि ज्ञान न हो, सारा ज्ञान व्यर्थ है, यदि कर्म का ज्ञान न हो। वहीं जब हम प्रेम से प्रेरित होकर कर्म करते हैं तब स्वयं से बंधते हैं, एक-दूसरे से बंधते हैं फिर भगवान से बंधते हैं।' हम अच्छे आदमी तभी बन सकते हैं, यदि हम में अपने आप पर नियंत्रण करने की क्षमता हो, यदि दृढ़ निश्चयी हों। हम में साहसिक निर्णय लेने की क्षमता हो। आशावादी दृष्टिकोण हो। सकारात्मक सोच हो।

भारतीय संस्कृति में कुछ सूत्र उपलब्ध हैं - 'बहुजन हिताय' और 'सर्वे भवंतु सुखिनः' । हमें देखना होगा कि इन सद् इच्छाओं के मार्ग में कौन-2 से अवरोध हैं और उन्हें कैसे दूर किया जा सकता है। हमारा अंतिम लक्ष्य 'सर्वे भवंतु सुखिनः' ही होना चाहिए। वही भविष्य वांछित है, जब 'सर्वे संतु निरामया' यानी सबको आनंद और शांति प्राप्त हो।

दसारी कृष्ण मूर्ति
सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी

2. खुशी का राज

एक बार की बात है। एक गांव में एक महान ऋषि रहता था। उस गांव के लोग उस ऋषि का बहुत ही सम्मान करते थे। गांव के सभी लोग जब भी कोई समस्या में होते तो वे ऋषि उस समस्या का हल जरूर बताते। सभी गांव वाले उस ऋषि से बहुत प्रशन थे। हर बार कोई नई समस्या लेकर उस ऋषि के पास आते और महान ऋषि उस समस्या का हल बतात्ते।

एक बार एक व्यक्ति उस ऋषि के पास एक सवाल लेकर आया और ऋषि से पूछा कि गुरू जी मैं एक प्रशन पूछना चाहता हूं। ऋषि ने कहा पूछो तुम्हारा क्या प्रशन है। वह व्यक्ति कहता है "मैं खुश कैसे रह सकता हूं मेरी ख़ुशी का राज (Secret of Happiness) क्या है?" तभी ऋषि ने जवाब दिया कि इसका जवाब पाने के लिए तुम्हे मेरे साथ जंगल में चलना होगा।

कुछ समय बाद वह व्यक्ति ख़ुशी का राज जानने के लिए ऋषि के साथ जंगल में जाने के लिए निकल लेता है और दोनों जंगल में जाते हैं। तभी रास्ते में एक बड़ा पत्थर आता है और ऋषि उस पत्थर को अपने साथ लेने के लिए उस व्यक्ति को कहते है। वह व्यक्ति ऋषि के आदेश को मानते हुए उस पत्थर को अपने हाथों में उठा लेता है।

कुछ समय बाद उस व्यक्ति को उस भारी पत्थर से हल्का दर्द होने लग जाता है। वह व्यक्ति इस दर्द को सहन कर लेता और चलता रहता है। काफी समय तक वह व्यक्ति उस दर्द को सहन करता है। लेकिन जब उसे दर्द ज्यादा होने लगता है तो वह महान ऋषि से कहता है कि मुझे दर्द हो रहा है और मैं थक गया हूं।

तभी ऋषि कहते हैं कि इसे नीचे रख दो। वह व्यक्ति पत्थर को नीचे रखता है तब जाकर उसे राहत मिलती है। फिर मुनि कहते हैं कि ये ही तुम्हारी ख़ुशी का राज है। वह व्यक्ति वापस पूछता है कि गुरूजी मैं कुछ समझा नहीं।

फिर ऋषि वापस उस व्यक्ति को जवाब देते हैं कि जिस तरह तुमने इस भारी पत्थर को दस मिनिट के लिए उठाकर रखा तो तुम्हे थोड़ा दर्द हुआ। 20 मिनिट तक उठाया तो उससे ज्यादा और अधिक समय तक उठाकर रखा तो ज्यादा दर्द होने लगा। ठीक उसी प्रकार जितनी देर तक हम अपने पर दुखों का बोझ लिए फिरेंगे हमें ख़ुशी नहीं मिलेगी। निराशा ही मिलती रहेगी। हमारी ख़ुशी का राज सिर्फ इस पर निर्भर करता है कि हम कितनी देर तक दुखों का बोझ अपने ऊपर रखते हैं।

यदि तुम्हे अपने जीवन में खुश रहना है तो कभी अपने ऊपर दुःख को हावी होने मत दो। दुःख इस भारी पत्थर की तरह है जिसे हम जितना रखेंगे उतना ही हमें दर्द और कष्ट देता रहेगा।

महांतेस हुग्गी
लेखापरीक्षक

3. सुविचार

प्रथम विचार

रिश्ते चाहे कितने ही बुरे हो, उन्हे कभी भी तोड़ना नहीं, क्योकि पानी चाहे कितना भी गन्दा क्यों न हो, यद्यपि वो तो प्यास नहीं बुझा सकता किंतु आग तो अवश्य बुझा सकता है

द्वितीय विचार

एक छोटी सी चींटी आपको पैर में काट सकती है, पर आप उसके पैर में नहीं काट सकते अत : जीवन में किसी को छोटा ना समझे, क्योकि वह जो कर सकता, शायद आप न कर पाये।

तृतीय विचार

जब कुछ सेकंड की मुस्कराहट से तस्वीर अच्छी आ सकती है, तो हमेशा मुस्करा कर जीने से जीवन अच्छा क्यों नहीं हो सकता

सदैव प्रसन्न रहिये और मुस्कुराते रहिये

विनोद कुमार मीणा
वरिष्ठ लेखा परीक्षक

4. परमात्मा और किसान

एक बार एक किसान परमात्मा से बड़ा नाराज हो गया ! कभी बाढ़ आ जाये, कभी सूखा पड़ जाए, कभी धूप बहुत तेज हो जाए तो कभी ओले पड़ जाये! हर बार कुछ ना कुछ कारण से उसकी फसल थोड़ी ख़राब हो जाये !

एक दिन बड़ा तंग आ कर उसने परमात्मा से कहा ,देखिये प्रभु, आप परमात्मा हैं , लेकिन लगता है आपको खेती-बाड़ी की ज्यादा जानकारी नहीं है ,एक प्रार्थना है कि एक साल मुझे मौका दीजिये , जैसा मै चाहू वैसा मौसम हो,फिर आप देखना मै कैसे अन्न के भण्डार भर दूंगा! परमात्मा मुस्कुराये और कहा ठीक है, जैसा तुम कहोगे वैसा ही मौसम दूंगा, मै दखल नहीं करूँगा!

किसान ने गेहूं की फ़सल बोई ,जब धूप चाही ,तब धूप मिली, जब पानी, तब पानी ! तेज धूप, ओले,बाढ़ ,आंधी तो उसने आने ही नहीं दी, समय के साथ फसल बढ़ी और किसान की ख़ुशी भी,क्योंकि ऐसी फसल तो आज तक नहीं हुई थी ! किसान ने मन ही मन सोचा अब पता चलेगा परमात्मा को, की फ़सल कैसे करते हैं ,बेकार ही इतने बरस हम किसानो को परेशान करते रहे.

फ़सल काटने का समय भी आया ,किसान बड़े गर्व से फ़सल काटने गया, लेकिन जैसे ही फसल काटने लगा ,एकदम से छाती पर हाथ रख कर बैठ गया! गेहूं की एक भी बाली के अन्दर गेहूं नहीं था ,सारी बालियाँ अन्दर से खाली थी, बड़ा दुखी होकर उसने परमात्मा से कहा ,प्रभु ये क्या हुआ ?

तब परमात्मा बोले- ये तो होना ही था ,तुमने पौधों को संघर्ष का ज़रा सा भी मौका नहीं दिया . ना तेज धूप में उनको तपने दिया , ना आंधी ओलों से जूझने दिया ,उनको किसी प्रकार की चुनौती का अहसास जरा भी नहीं होने दिया , इसीलिए सब पौधे खोखले रह गए, जब आंधी आती है, तेज बारिश होती है ओले गिरते हैं तब पोधा अपने बल से ही खड़ा रहता है, वो अपना अस्तित्व बचाने का संघर्ष करता है और इस संघर्ष से जो बल पैदा होता है वही उसे शक्ति देता है ,उर्जा देता है, उसकी जीवटता को उभारता है.सोने को भी कुंदन बनने के लिए आग में तपने , हथौड़ी से पिटने,गलने जैसी चुनोतियो से गुजरना पड़ता है तभी उसकी स्वर्णिम आभा उभरती है,उसे अनमोल बनाती है !उसी तरह जिंदगी में भी अगर संघर्ष ना हो ,चुनौती ना हो तो आदमी खोखला ही रह जाता है, उसके अन्दर कोई गुण नहीं आ पाता ! ये चुनोतियाँ ही हैं जो आदमी रूपी तलवार को धार देती हैं ,उसे सशक्त और प्रखर बनाती हैं, अगर प्रतिभाशाली बनना है तो चुनोतियाँ तो स्वीकार करनी ही पड़ेंगी, अन्यथा हम खोखले ही रह जायेंगे. अगर जिंदगी में प्रखर बनना है,प्रतिभाशाली बनना है ,तो संघर्ष और चुनोतियो का सामना तो करना ही पड़ेगा !

रागिनी सिंह
लेखा परीक्षक

5. सत्रह ऊंट

कहानी एक आदमी की है जिसने अपने तीन बेटों के लिए सत्रह ऊंट छोड़े, और पहले बेटे के लिए उसने आधे ऊंट छोड़े, दूसरे बेटे को ऊंटों में से एक तिहाई और तीसरे बेटे को ऊंटों में से एक नौवां छोड़ दिया। समस्या यह है कि सत्रह न तो दो से विभाजित होता है और न ही तीन से और यहां तक कि नौ से भी नहीं। जिससे कि तीनों भाई विवाद को सुलझा नहीं सके, इसके लिए उन्होंने एक बुद्धिमान बूढ़ी औरत से संपर्क किया और उस बुद्धिमान बूढ़ी औरत से परामर्श किया, जो उन्हें एक अतिरिक्त ऊंट उधार देती है । अब, अठारह ऊँट होने पर बड़ा भाई नौ ऊँट अर्थात् एक आधा, दूसरे पुत्र ने छः ऊँट अपने तीसरे, और तीसरे पुत्र को दो ऊँट मिले, उसका नौवां। चूंकि नौ जमा छह जमा दो सत्रह पर आता है, इसलिए महिला का ऊंट बचा हुआ था और भाइयों ने उसे वापस दे दिया।

कहानी काफी दिलचस्प है और बातचीत में दिलचस्पी रखने वालों को विचार के लिए कुछ भोजन प्रदान करती है। यह हमें पाई का विस्तार करने और चीजों को अलग-अलग दृष्टिकोणों से देखने का सुझाव देता है, अर्थात बाहर से। इसके अलावा यह दिखाता है कि कैसे बुद्धिमान बूढ़ी औरत अंगों पर कोई संकल्प नहीं थोपती। अंत में, हम देखते हैं कि बड़े बेटे को 8.5 ऊंट देने के लिए गतिरोध या जीवित ऊंट को विभाजित करने की तुलना में यह समाधान मूल्य उत्पन्न करता है।

मैं कहूंगा कि बुद्धिमान बूढ़ी औरत की भूमिका एक मध्यस्थ की होती है, जो एक तटस्थ तृतीय पक्ष है जो परस्पर सहमत संकल्प तक पहुंचने में विवादित पक्षों की सहायता करता है।

राजेश कुमार
सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी

6. <u>भाग्य</u>

एक धनी और पराक्रमी राजा एक बार अपने एक सेवक के साथ अपने बगीचे में टहल रहा था।

अचानक, नौकर चिल्लाया और कहा कि उसने अभी-अभी मृत्यु का सामना किया है, जिसने उसे मारने की धमकी दी है । नौकर घबरा गया और उसने अपने राजा से सबसे तीव्र गति से दौड़ने वाले घोड़े को देने का अनुरोध किया। जिससे की वह उसी शाम तक अपने गाँव में परिवार वालों के पास पहुँच कर अपनी जान बचा सके ।

राजा ने उसकी बात मान कर उसे एक सबसे तीव्र गति से दौड़ने वाला घोडा दे दिया और नौकर तुरंत घोड़े पर सवार होकर अपनी जान बचने के लिए अपने घर की ओर रवाना हुआ ।

इधर राजा भी अपने महल में वापस आ गया जहाँ राजा की मुलाकात मृत्यु से हुई। राजा ने मृत्यु से तुरंत सवाल किया, " तुमने मेरे नौकर को अकारण ही क्यों डराया और धमकाया?"

इस पर मृत्यु ने तुरंत जवाब दिया, " महाराज! मैंने उसे धमकी नहीं दी थी बल्कि मैं तो उसके यहाँ पर उपस्थित होने से आश्चर्य चकित था जबकि मेरी योजना के अनुसार मुझे उसे आज रात उसके गाँव में उसके घर पर मिल कर गले लगाना है ।

राजा को मृत्यु की बात सुनकर यह अहसास हुआ की नौकर के भाग्य को वह इतनी कोशिश के बाद भी बदल नहीं सका । किन्तु उसके मन में इतना सुकून अवश्य था की स्थिति के अनुसार उसने अपने नौकर के प्रति कर्तव्य को बखूबी निभाया।

शिक्षा - भाग्य का फैसला जो भी हो परन्तु मनुष्य को हर स्थिति में अपना कर्म निरंतर करते रहना चाहिए।

(शैलेन्द्र प्रजापति)

सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी

7. हुब्बल्ली एक परिचय

हुब्बली, कर्नाटक राज्य का एक मुख्य शहर है। यह शहर धारवाड़ जिले के अंतर्गत हुब्बली-धारवाड़ जुड़वा शहर के नाम से चर्चित है । हुब्बली शब्द यहाँ के क्षेत्रीय शब्द हुविना तथा वाली अर्थात फूलों की लता से आया है। ह्ब्बली शहर का इतिहास भी बड़ा ही प्रभवशाली रहा है। हुब्बली शहर, विजयनगर साम्राज्य के अंदर भवानी शंकरा मंदिर एवं जैन बस्ती वाला एक औधोगिक केंद्र था, जो कपास, शोरा एवं लोहा के लिए प्रसिद्व था। 17 वी शताब्दी में अंग्रेजो द्वारा एक फैक्ट्री यहाँ लगायी गई, जिसे मराठो द्वारा लूट लिया गया। मुगलों द्वारा हुब्बली की विजय कर लेने के बाद यह नवाब सवानूर के अधीन आ गया। समय बीतने के साथ हुब्बली कभी मराठो के अधीन तो कभी हैदर अली एवं अंग्रेजो के अधीन रहा। वर्ष 1880 में रेलवे वर्कशॉप के शुरू होने से यह शहर दक्षिण भारत में औधोगिक केंद्र के रूप में जाना जाने लगा। प्राचीन हुब्बली शहर के स्थापत्य कला के सर्वश्रेष्ठ उदाहरणों में चालुक्य कालीन चन्द्रमोलेश्वर मंदिर एवं सूफी दरगाह हैं। समय के साथ भारत के अन्य शहरों की तरह हुब्बली शहर भी विकास के पथ पर अग्रसर है । यह शहर भारतीय रेलवे के दक्षिण पश्चिम रेलवे क्षेत्रीय कार्यालय के रूप के चयनित होने के कारण पुरे भारत के रेलवे सिस्टम में वर्णित है। यहाँ का भव्य रेलवे स्टेशन अंतराष्ट्रीय मानकों पर बनाया गया है।

हाल ही में हुब्बली में परिवहन व्यवस्था को सुगम बनाने के लिए बस रैपिड ट्रांजिट सिस्टम शुरू किया गया है। इस बस मार्ग पर ए सी बसों की यात्रा बड़ी ही आनंदमय है।

हुब्बली शहर अब एक महत्वपूर्ण औधोगिक केंद्र बन गया है। यहाँ छोटे - छोटे उद्योगों का वृहत क्लस्टर स्थापित हो गया है। हुब्बली शहर में अभी भी विकास की अपर संभावनाए हैं। खासकर रेस्टोरेंट, वस्त्र , एवं सॉफ्टवेयर में।

राकेश कुमार

सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी

8. सफलता का रास्ता

एक बार एक नौजवान लड़के ने सुकरात से पूछा कि सफलता का रास्ता क्या है। सुकरात ने उस लड़के से कहा कि तुम कल मुझे नदी के किनारे मिलो। वो मिले. फिर सुकरात ने नौजवान से उनके साथ नदी की तरफ बढ़ने को कहा.और जब आगे बढ़ते-बढ़ते पानी गले तक पहुँच गया, तभी अचानक सुकरात ने उस लड़के का सर पकड़ के पानी में डुबो दिया।

लड़का बाहर निकलने के लिए संघर्ष करने लगा , लेकिन सुकरात ताकतवर था। उसे तब तक डुबोये रखे जब तक की वो नीला नहीं पड़ने लगा । फिर सुकरात ने उसका सर पानी से बाहर निकाल दिया और बाहर निकलते ही जो चीज उस लड़के ने सबसे पहले की वो थी हाँफते-हाँफते तेजी से सांस लेना ।

सुकरात ने पूछा ," जब तुम वहाँ थे तो तुम सबसे ज्यादा क्या चाहते थे?"

लड़के ने उत्तर दिया,"सांस लेना"

सुकरात ने कहा," यही सफलता का रास्ता है । जब तुम सफलता को उतनी ही बुरी तरह से चाहोगे जितना की तुम सांस लेना चाहते थे तो वो तुम्हे मिल जाएगी" इसके आलावा और कोई रास्ता नहीं है ।

दोस्तों, जब आप सिर्फ और सिर्फ एक चीज चाहते हैं तो वो चीज आपको मिल जाती है । इसलिए सफलता पाने के लिए एकाग्रता बहुत ज़रूरी है, सफलता को पाने की जो चाहता है उसमे इंटेंसिटी होना बहुत ज़रूरी है..और जब आप वो फोकस और वो इंटेंसिटी पा लेते हैं तो सफलता आपको मिल ही जाती है.

विपिन कुमार
आशुलिपिक

9. कायरता - एक अनोखी कहानी

आज से 10 साल पहले बिहार मे सोहन नाम का एक आदमी अपने परिवार के साथ रहता था | उसकी पत्नी हमेशा बीमार रहती थी , जिसकी वजह से वह हमेशा परेशान रहता था | उसका एक बेटा भी था , वह अपने परिवार वालो से बहुत ही ज्यादा प्यार करता था | बात ठण्ड के मौसम की है , उसकी पत्नी पहले की तरह बीमार है और वह मजे से घूम रहा था | एक दिन एक डॉक्टर साहब आये और बोले की तुम्हरी पत्नी को एक खतरनाक बीमारी है और वह अब ठीक नहीं हो सकती है | यह सुनकर उसका पति एक दम दर सा गया और बोला अब क्या होगा | वह बहुत ही परेशान था , उसको रात मे नींद नहीं आ रही थी , उसने एक प्लान बनाया और अपने बच्चे को लेकर रात को घर छोड़ कर भाग गया | उसकी पत्नी जब उठी तो अपने पति और बच्चे को न पाकर चिलाने लगी और खूब रोई | वह हर रोज अपने पति और बच्चे का इंतज़ार करती थी , लेकिन वो दोनों किसी और सहर मे चले गए थे |

कुछ समय बाद उसकी पत्नी की तबियत और खराब होने लगी और एक दिन वह अपनी जिन्दगी से हार गयी और उसकी मौत हो गयी | उसके मोहले वालो ने मिलकर उसका क्रिया - कर्म किया | जब उसके पति को पता चला की उसकी पत्नी मर गयी तो वह गांव वापस आया | उसको देख कर सब लोग गालिया दे रहे थे और कायर- कायर कह रहे थे , वह कुछ भी नहीं बोला और सीधा अपने घर के अंदर चला गया | उसको पहली बार यह महसूस हुआ की वह कायर है , उसने अपनी पत्नी के साथ धोखा किया है |

यह सोचकर पूरी रात उसको नींद नहीं आयी , सुबह वह रेलवे स्टेशन की पटरियों पर घूम रहा था की उसने देखा एक महिला ट्रेन से कट जाने वाली थी | वह यह सब देख रहा था और उसका लड़का भी वहां पर आया और बोला पापा उसको बचाओ फिर भी उसकी कायरता की वजह से वह , वहा जा नहीं पा रहा था | फिर उसने हिम्मत कर के ट्रेन के पास गया और उसको धकेल दिया , वह औरत तो बच गयी लेकिन सोहन का दोनों पैर कट चूका था और वह खून से लथपथ था | उसने अपने बच्चे को बुलया और बोला अब सब को बता देना मे कायर नहीं हु , मे तुम्हारी माँ को नहीं बचा सका लेकिन किसी और को बचा दिया | यह कह कर उसने अंतिम सास ली | तो दोस्तों जीवन मे हमें कभी भी हार नहीं माननी चाहिए |

उदय कुमार बी. मनकट्टी
क्लर्क/टाइपिस्ट

10. <u>सच्ची मित्रता</u>

एक राजा और उसका मंत्री बहुत अच्छे मित्र थे। वे हमेशा साथ - साथ रहते थे। उनकी तरह, उनके बेटे भी एक साथ बड़े हुए और बहुत करीबी दोस्त बने । एक दिन दोनों शिकार पर गए। रास्ते में उन्हें बहुत प्यास लगी और वे थक गए इसलिए उन्होंने एक पेड़ के नीचे आराम करने का फैसला किया। मंत्री का बेटा पानी की तलाश में गहरे जंगल में चला गया। एक झरने के पास पहुँचकर उसने एक सुंदर परी को देखा। लेकिन परी के पास एक शेर बैठा था। उसने धीरे से झील से कुछ पानी निकाला और अपने दोस्त के पास वापस लौट आया।

उसने राजा के बेटे को घटना सुनाई और उसे झरने के पास ले गया। वहां पहुंचने पर उन्होंने देखा कि शेर परी की गोद में सो रहा है। उन्होंने परी को महल में ले जाने का फैसला किया जबकि मंत्री का बेटा शेर के साथ ही रहा। थोड़ी देर बाद जब शेर उठा तो लड़के ने कहा कि उसका दोस्त परी को महल में ले गया है। शेर फिर हँसा और उससे कहा कि अगर राजा का बेटा सच्चा दोस्त होता तो वह उसे शेर के साथ कभी अकेला नहीं छोड़ता। फिर उसने तीन महान मित्रों- एक राजा, एक पुजारी और एक भवन निर्माता की कहानी सुनाना शुरू किया, जिन्होंने दोस्ती का सही अर्थ दिखाया और अंत तक हमेशा एक-दूसरे के साथ रहे।

कहानी एक बड़ा सबक देती है कि हमें अपने दोस्तों का चयन बहुत ध्यान से करना चाहिए।

पीयूष पपनेजा
सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी

11. आत्मसंयम

मानव के जीवन में आत्मसंयम का अत्यंत ही महत्व है। आत्मसंयम को आत्मसात कर हम जीवन की विषम परिस्थितियों को जीत सकते हैं। वाहन की गति जितनी तीव्र होगी, निश्चित रूप से उसे नियंत्रित करना भी उतना ही मुश्किल होगा। संयोग से मनुष्य का मन भी एक तीव्र गति वाले वाहन के ही समतुल्य है। प्रकृति ने मानव को उपहार स्वरूप ऊर्जा का अथाह सागर प्रदान किया है, किंतु यदि मन वश में नहीं है तो इस ऊर्जा का प्रवाह नकारात्मक दिशा में होने लगता है। इन सभी दुष्परिणामों से बचने का एकमात्र उपाय है आत्मसंयम। एक बार यदि मनसा वाचा कर्मणा इसे जीवन का अंग बना लिया जाए तो गुणों का एक समूह यथा - धैर्य, क्षमा, एकाग्रता, प्रेम, उदारता, त्याग इत्यादि स्वतः ही व्यक्तित्व में समावेशित हो जाता है।

आत्मसंयम के लिए आत्मनिरीक्षण आवश्यक है। हमें अपने व्यक्तित्व के नकारात्मक पहलुओं एवं अपनी बुराइयों को पहचान कर उनको त्यागने का संकल्प लेना चाहिए। तदुपरांत नैतिकता एवं धैर्य का अवलंब लेकर आत्मसंयम की साधना का प्रयास प्रारंभ करना चाहिए। मानसिक विकारों, चारित्रिक दुर्बलताओं, नैतिक पतन आदि अनेक शत्रुओं से रक्षा करने के कारण आत्मसंयम मानव के लिए एक सुरक्षा कवच की भूमिका का निर्वहन करता है।

र. बद्रीनाथ

वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी

12. <u>प्लास्टिक प्रदूषण</u>

आधुनिक युग में प्लास्टिक ने सबसे अधिक नुकसान पर्यावरण को पहुँचाया है। पॉलीथिन की सबसे बड़ी कमी यह है कि यह प्राकृतिक रूप से नष्ट नहीं होता जो स्वास्थ्य के लिए हानिकारक भी है। इसके प्रयोग से साँस और त्वचा संबंधी रोगों तथा कैंसर का खतरा बढ़ जाता है। पॉलीथिन की अधिकता भूमि के जल-स्तर को घटा रही है और उसे ज़हरीला बना रही है।

पॉलीथिन कागज या कपड़े की तरह गलता नहीं है बल्कि जमीन में जाकर उसके उर्वरकता को नष्ट कर देता है। नदी, नालों में जाकर उसके बहाव में अवरोध उत्पन्न करता है जिसके कारण गंदगी व बिमारियाँ उत्पन्न होती हैं। आज चारों ओर प्लास्टिक का बड़े पैमाने पर प्रयोग हो रहा है। इसका दुष्परिणाम यह है कि हर जगह प्लास्टिक का कचरा फैला हुआ है। इसका प्रमुख कारण यह है कि प्लास्टिक सस्ता और टिकाऊ होता है। धूप, सर्दी तथा गर्मी का इस पर कोई प्रभाव नहीं होता। यही कारण है कि लोग प्लास्टिक को अधिक पसंद करने लगे हैं। परंतु इसकी वृद्धि पृथ्वी के वातावरण और उसके परिवेश को दूषित कर रही है। यदि शीघ्र ही इस समस्या का समाधान नहीं निकाला गया तो आने वाले समय में मानव जीवन के लिए एक बहुत बड़ी चुनौती खड़ी हो जाएगी।

अभिषेक आनंद
आंकड़ा प्रविष्टि प्रचालक

13. मुश्किलों का हल

महात्मा बुद्ध जी के समय की बात है अजातशत्रु नाम का एक राजा था। उनका **राज्य बहुत अच्छा चल रहा था**, किंतु कहते हैं ना कि समय हमेशा एक जैसा नहीं रहता। ऐसा ही अचार सत्तू के साथ हुआ। राजा कई मुश्किलों से घिर गए और उन मुश्किलों से बाहर नहीं निकल पा रहे थे।

उन्होंने कई युक्तियां अपनाई, लेकिन असफल रहे। एक दिन उनकी मुलाकात एक तांत्रिक से हुई। राजा ने तांत्रिक को अपनी मुश्किलें बताइए।

तांत्रिक ने राजा की बातों को ध्यान से सुना, फिर उसने एक उपाय बताया। **तांत्रिक ने कहा,** 'आपको पशु बलि देनी पड़ेगी तभी आपकी मुश्किलों का समाधान होगा।'

पहले तो राजा काफी सोच विचार में पड़ गया लेकिन उन्हें जब कोई भी रास्ता ना दिखा दो उन्होंने तांत्रिक की बात मान ली।

तांत्रिक के गया कहे एक बड़ा अनुष्ठान किया गया। पशुओं को मैदान में बलि देने के लिए बांध दिया गया। संयोगवश उस समय महात्मा बुद्ध राजा के नगर में पहुंचे। वे उसी स्थान से गुजर रहे थे, जहां पर राजा ने अनुष्ठान कराया था।

महात्मा बुद्ध ने जब देखा कि निर्दोष पशुओं की बलि दी जाने वाली है तो वे राजा के पास गए और बोले, 'राजन, आप इन निर्दोष पशुओं को क्यों मारने जा रहे हैं?'

राजा बोले, ' महात्मा जी, मैं इन्हें मारने नहीं अपितु राज्य के कल्याण के लिए इन की बलि देने जा रहा हूं, जिससे सारे राज्य का कल्याण होगा।'

महात्मा बुद्ध बोले, 'क्या किसी निर्दोष जीव की बलि देने से किसी का भला भी हो सकता है?

थोड़ा सा रुक कर महात्मा बुद्ध ने जमीन से एक तिनका उठाया और राजा को देते हुए बोले, 'इसे तोड़कर दिखाइए।

राजा ने तिनके के दो टुकड़े कर दिए।

बुद्ध बोले, 'इसे अब पून: जोड़ दें।'

राजा बोले, ' महात्मा जी, यह आप कैसी बातें कर रहे हैं इसे तो अब कोई भी नहीं जोड़ सकता।'

तब बुद्ध राजा को समझाते हुए बोले, 'राजन, जिस प्रकार इस तिनके के टूट जाने के बाद आप इसे नहीं जोड़ सकते, ठीक उसी प्रकार जब आप इन पशुओं की बलि देंगे तो यह निर्दोष जीव आप के कारण मृत्यु को प्राप्त होंगे और इन्हें आप दोबारा जिंदा नहीं कर सकते, बल्कि इनके मरने के बाद आपको जीव हत्या का दोष लगेगा और आपकी मुश्किल है कम होने के बजाय और भी कहीं अधिक बढ़ जाएंगी, क्योंकि किसी भी **निर्दोष जीव को मार कर** कोई भी व्यक्ति खुशी नहीं प्राप्त कर सकता। आपकी समस्या का हल निर्दोष जीवो को मारने से कैसे हो सकता है? आप राजा हैं, आपको सोच विचार कर निर्णय लेना चाहिए।

बुद्ध की बात सुनकर अजातशत्रु उनके चरणों में गिर पड़े और अपनी भूल की शमा मांगने लगे। अजातशत्रु ने ऐलान करा दिया कि अब से उनके राज्य में किसी निर्दोष जीव की हत्या नहीं की जाएगी।

अगर आप सच में अपनी मुश्किलों का हल चाहते हैं तो दिमाग से काम लीजिए, मुश्किलें तो आती जाती रहती हैं। यही जिंदगी का सच है। निर्दोष को मारने से समस्याएं नहीं समाप्त होंगी, बल्कि उसका हल आपको बुद्धि से ही निकालना होगा।

सीयाराम मीणा
वरिष्ठ लेखापरीक्षक

14. <u>सफलता का रहस्य</u>

एक बार एक नौजवान लड़के ने सुकरात से पूछा कि सफलता का रहस्य क्या है? सुकरात ने उस लड़के से कहा कि तुम कल मुझे नदी के किनारे मिलो। वो मिले, फिर सुकरात ने नौजवान से उनके साथ नदी की तरफ बढ़ने को कहा और जब आगे बढ़ते-बढ़ते पानी गले तक पहुँच गया, तभी अचानक सुकरात ने उस लड़के का सर पकड़ के पानी में डुबो दिया।

इससे वह लड़का बहुत भयभीत हो गया, और बाहर निकलने के लिए संघर्ष करने लगा , लेकिन सुकरात उस लड़के से ताकतवर थे और उसे तब तक डुबोये रखे जब तक की वो नीला नहीं पड़ने लगा । फिर सुकरात ने उसका सर पानी से बाहर निकाल दिया और बाहर निकलते ही जो चीज उस लड़के ने सबसे पहले की वो थी हाँफते-हाँफते तेजी से सांस लेना । अब सुकरात ने पूछा ," जब तुम वहाँ थे तो तुम सबसे ज्यादा क्या चाहते थे?" लड़के ने उत्तर दिया,"सांस लेना" सुकरात ने कहा," यही सफलता का रहस्य है। जब तुम सफलता को उतनी ही बुरी तरह से चाहोगे जितना की तुम सांस लेना चाहते थे तो वो तुम्हे अवश्य मिल जाएगी" इसके आलावा और कोई रहस्य नहीं है ।

शिक्षा :- सफलता प्राप्त करने के लिए लक्ष्य पर ध्यान केंद्रित करना, दृढ इच्छा शक्ति के साथ कठिन परिश्रम करना बहुत आवश्यक है।

शुभम गौर
सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी

15. <u>एकाग्रता</u>

मानव मन चंचलता का प्रतीक है। मन को नियंत्रित कर पाना किसी कठिन साधना के समतुल्य है। मन में विचारों की उथल-पुथल अनवरत रूप से चलती रहती है। मन की एक विशेषता यह भी है कि कोई एक विचार इसमें अधिक समय तक नहीं टिकता है। मन का विचार शून्य होना ध्यान की स्थिति कहलाती है एवं मन में किसी एक विचार विशेष का ही समाहित होना एकाग्रता की दशा कहलाती है।

जीवन में अपने लक्ष्य तक पहुंचने के एकाग्रता एक अनिवार्य शर्त है। एकाग्रता को अपनी साधना का अंग बनाकर हम ऊर्जा एवं आत्मविश्वास से सदा ओतप्रोत रहते हैं एवं कठिन से कठिन लक्ष्य को हम अपने लिए आसान बना सकते हैं। किसी भी बड़े लक्ष्य तक पहुंचने के लिए मन की स्थिरता का अत्यंत महत्व है। एकाग्र होकर किसी लक्ष्य की प्राप्ति के लिए प्रयास करने पर हम ऐसे कारकों से स्वतः दूर होते जाते हैं, जिनकी भूमिका महज हमारे जीवन में नकारात्मक भावनाओं का समावेश करके हमें लक्ष्यों की प्राप्ति एवं मन की शांति के लिए एकाग्रता का होना अत्यंत महत्वपूर्ण है।

टी. वेंकट रथनैय्या
लेखापरीक्षक

हिन्दी पखवाड़ा प्रतियोगिता 2022

हिन्दी पखवाड़ा समापन समारोह - 2021 की झलकियां

महानिदेशक लेखापरीक्षा का कार्यालय
दक्षिण पश्चिम रेलवे हुब्बल्ली
580023 (कर्नाटक)